इकाई 13 परिवार

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- समझा सकेंगे कि यूरोपीय परिवार को अच्छी तरह समझने के लिए सदस्यता की तुलना में पारिवारिक ढांचे का विश्लेषण करना क्यों ज्यादा जरूरी है,
- इतिहासकारों की इस बहस से परिचित हो सकेंगे कि औद्योगिक पूर्व और औद्योगिक परिवार के बीच कोई नैरंतर्य था या नहीं, और
- बदलते सामाजिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य में परिवार में हुए परिवर्तनों के परीक्षण के लिए उपयोग में लाए गए विभिन्न मानदंडों को समझ सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

इतिहासकारों ने समाज को सहारा देनेवाले संस्थागत ढांचों के अध्ययन पर जोर दिया है क्योंकि इससे सामाजिक संरचनाओं में आने वाले परिवर्तन के वर्णन और व्याख्या में मदद मिलती है। इसी संदर्भ में जमींदारी, श्रेणि व्यवस्था, विधायिका, व्यापारिक प्रतिष्ठान और सेना पर इतिहासकारों ने विचार किया है। एक संस्था के रूप में परिवार का गंभीर अध्ययन इतिहासकारों ने अपेक्षाकृत देर से किया। परिवारों का ऐतिहासिक महत्व समझने में हुए इस बिलम्ब को देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र में काफी पहले से ही परिवार के अध्ययन पर बल दिया जा रहा था और आदिम शिकारी और संग्रहकर्ता समाजों से लेकर आधुनिक समाजों के अध्ययन तक में परिवारों को महत्व दिया जाता था।

1960 के दशक से ही परिवार के इतिहास पर विचार किया जाने लगा था और ऐतिहासिक जनसांख्यिकी, अवैधता, अनाथपन, बचपन, किशोरों और बुजुर्गों की समस्याओं जैसे विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित हुई। एक सामाजिक संस्था के रूप में परिवार का लम्बा इतिहास है। परिवार की गतिविधियों, कार्यों, और संघटन की परिवर्तनशीलता के कारण इसका अध्ययन रोचक होने के साथ-साथ मुश्किल भी रहा है। परिवार में इतनी ज्यादा परिवर्तनशीलता और विभिन्नताएं हैं कि हर समय और भौगोलिक स्थान के लिए विश्लेषण के किसी एक ही ढांचे से काम नहीं हो सकता है। परिवार में होने वाले परिवर्तन और नैरंतर्य को समझने के लिए पारिवारिक संरचना और उसके कार्यों में होने वाले परिवर्तन का दीर्घावधि विश्लेषण करना होता है।

13.2 यूरोपीय परिवार को समझना

पूर्व-औद्योगिक परिवार जनन, उत्पादन, उपभोग, समाजीकरण, शिक्षा और कुछ मामलों में राजनैतिक कार्यवाई की एक महत्वपूर्ण इकाई था। बड़े-बूढ़ों, कमजोर, और बीमार लोगों के लिए यह सुरक्षा का साधन भी था। परिवार का काम इतना लम्बा चौड़ा है कि इसे किसी स्पष्ट, साफ और आम परिभाषा में बांधना मुश्किल है। यदि परिवार को एक परिभाषा में बांधा गया तो यह सरलीकरण तो होगा ही, यह एक कृत्रिम और संकीर्ण दृष्टिकोण भी होगा।

13.2.1 सदस्यता

पश्चिम यूरोप के परिवार के इतिहास में परिवार की सदस्यता के विषय में हमेशा से अस्पष्टता और विवाद बना रहा है। उदाहरण के लिए क्या एक परिवार का सदस्य दूसरे परिवार का सदस्य नहीं हो सकता था? विवाह के बाद एक नई पारिवारिक इकाई की शुरुआत होतीं थी पर हमेशा पति-पत्नी का अपने मूल परिवारों से संबंध समाप्त नहीं हो जाता था। यहां तक कि एकल परिवार में पति अपने माता-पिता के परिवार से गहरा संबंध रखता था। पश्चिम यूरोप में कुछ युवा अपने परिवार के अतिरिक्त दूसरे परिवार में काम करते हुए जीवन यापन करते थे। कई लोग एक से ज्यादा परिवारों के सदस्य होते थे। इसलिए परिवार की अवधारणा में एक परिवार से अधिक परिवारों का सदस्य होना शामिल था।

इसलिए सभी सदस्यों की एक परिवार के सदस्यता के मानदंड के आधार पर ही एक परिवार की इकाई का निर्धारण नहीं किया जा सकता बल्कि इसमें दाम्पत्य और प्रजनन आधारित अनेक इकाइयां एक साथ जुड़ी होती थीं। पश्चिमी यूरोप में परिवार कई प्रकार के संबंधों से जुड़ा होता था और उसके अलग-अलग प्रकार के काम निर्धारित होते थे। प्रजनन के लिए पारिवारिक इकाई का अर्थ उत्पादन के लिए पारिवारिक इकाई के अर्थ से बिल्कुल भिन्न होता था। इसलिए परिवार को किसी एक परिभाषा या सामान्य आधार पर परिभाषित करना सही नहीं होगा। पश्चिमी यूरोप में जन्म देने वाले परिवार से अलग दूसरे परिवार में कुछ दिनों के लिए रहना और काम करना अर्थात उस परिवार की अस्थाई सदस्यता प्राप्त करना आम बात थी। अतएव इस प्रकार एक व्यक्ति एक परिवार का नहीं बल्कि अनेक परिवार का सदस्य हो सकता था जिसका संबंध विवाह, वंश या पारिवारिक विस्तार से होता था।

एक व्यक्ति के जीवन में परिवार की सदस्यता बदलती रहती थी। इसलिए बदलती पारिवारिक सदस्यता के अध्ययन के स्रोतों की प्रकृति का विशेष महत्व है। हमारे पास दो प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं। एक खास समय में परिवार के सदस्यों का विवरण अर्थात खास समय में परिवार के लोगों की संख्या और उनकी सूची। हालांकि इससे यह नहीं पता चलता कि जिन वयस्क सदस्यों की सूची दी गई वे इसके पहले किसी दूसरे परिवार के सदस्य थे या नहीं। परिवार के इस पक्ष पर विचार करने के लिए हमें समग्र आधारित अध्ययन करना होगा। यहां व्यक्तियों का अध्ययन उनके पूरे जीवन के दौरान किया जाता था न कि किसी खास समय पर। जनसांख्यिकी में समकालिक और समग्र दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। यदि सामूहिक आधारित खोज के बाद ताजा सूचियों का अध्ययन किया जाता तो इससे वंश विस्तार का पता चलता। इससे यह पता लगाया जा सकता था कि शादी के बाद भी परिवार के छोटे बेटों ने अपनी गृहस्थी जमाने के बाद भी वंश परिवार की सदस्यता कायम रखी थी या नहीं और बड़े भाई की मृत्यु के बाद वह पुन: अपने मूल वंश के परिवार में वापस आ सकता है।

13.2.2 पारिवारिक ढांचा

पारिवारिक सदस्यता की जटिलता के मुकाबले में घरेलू संरचना को व्याख्यायित करना ज्यादा आसान था क्योंकि राज्य और चर्च ने सूचनाएं प्राप्त करने के लिए घर को ही आधारभूत इकाई के रूप में उपयोग किया था। सामाजिक इतिहासकारों और सांख्यिकीवेत्ताओं ने इस पर काफी बहस की है कि घर सामाजिक संगठन की एक स्वतंत्र इकाई है या मात्र परिवार का विस्तार है।

इतिहासकार कहते हैं कि हमारा अध्ययन हमें प्राप्त स्रोतों तक ही सीमित है। पारिवारिक जीवन के कुछ पक्षों का अध्ययन आसानी से और सटीक रूप में किया जा सकता है जबकि कुछ बातों का अनुमान ही किया जा सकता है। चर्चों में दर्ज किए गए जन्म, विवाह और दफ़न के आंकड़ों से परिवार की संरचना की विधि का पता चलता है और एक प्रजनन इकाई के रूप में परिवार की स्पष्ट स्थिति की भी इससे जानकारी होती है।

परिवार की पुनर्संरचना जानने के लिए कई तथ्यों का सूक्ष्म अध्ययन करना होता है। उदाहरणस्वरूप पति-पत्नी के बीच उम्र का कितना अंतर है, बच्चों के जन्म के बीच कितना अंतर है। परिवार कितना बड़ा या छोटा है, क्या परिवार में किसी प्रकार के अवैध संबंध हैं, माता-पिता की मृत्यु और बच्चों के विवाह में क्या संबंध है, विभिन्न वर्गों या रोजगार समूहों के जनसांख्यिकी व्यवहार में क्या कोई अंतर है, परिवार के आकार में अन्तर कैसा है, परिवार में बच्चों के जीवित रहने की क्या दर है आदि।

एक परिवार के विवरण में आमतौर पर परिवार के सदस्यों का नाम, इसके मुखिया और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उसके संबंध के उल्लेख के साथ-साथ स्त्री पुरुष, विवाहितों, अविवाहितों और जन्म स्थान का भी उल्लेख होता है। जहां सामुदायिक रजिस्टर और विवरण पुस्तिका होती है वहां ये पूरक और अनुपूरक के रूप में काम करते हैं।

सामान्य स्रोतों का इस्तेमाल कर परिवार के कई अन्य पक्षों का अध्ययन करना मुश्किल है। सामाजिक फैलाव और व्यावहारिक प्रवृत्तियां इनमें प्रमुख हैं। जमींदारों की अदालत और बाद में निचली अदालतों की कार्यवाइयों के बारे में ऐसे अप्रत्यक्ष प्रमाण हैं जिनसे यह पता चलता है कि विभिन्न कुल समूहों के सदस्यों के बीच किस प्रकार का और कैसा संबंध था। किसी खास व्यक्ति की रुचि का अध्ययन करने से उस व्यक्ति का उसके परिवार और संबंधियों के बीच के संबंध का पता चलता है। उदाहरणस्वरूप यदि कोई व्यक्ति कोई अनुष्ठान करता है जैसे वह कुल देवता का चुनाव करता है तो इसमें उसके पूरे व्यवहार का और अपने पूरे परिवार के साथ संबंध का पता चलता है।

परिवार और सामाजिक जीवन की आचार संहिता के आत्मसातीकरण से उत्पन्न मनोवैज्ञानिक संरचना पारिवारिक इतिहास के अध्ययन का एक प्रमुख क्षेत्र है। परिवार की संरचना के परिणामात्मक पक्ष और परिवर्तन की खोज के समान ही मानसिकता का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है।

13.3 ऐतिहासिक परिवर्तन

पहले आमतौर पर यह माना जाता था कि पूर्व-औद्योगिक समाज से औद्योगिक समाज की ओर बढ़ने के कम में परिवार का पुराना रूप नष्ट हो गया जिसमें कम उम्र में शादी कर दी जाती थी, एक साथ बड़ी संख्या में लोग रहते थे और परिवार के सदस्य अपने घर और परिवार के साथ गहरे रूप में जुड़े होते थे। ऐसा माना जाता था कि इनके स्थान पर दाम्पत्य जीवन पर आधारित छोटे परिवार की शुरुआत हुई, शादी की उम्र बढ़ी और अन्य कुल जनों के साथ संबंध कम होता चला गया। 1960 के दशक में पीटर लैसेलेट और जॉन हैजनल जैसे विद्वानों ने इस दिशा में शोध कर इस मान्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाया और उन्होंने कहा कि यह मान्यता सही नहीं हैं।

13.3.1 नैरंतर्य

कैम्ब्रिज ग्रुप फॉर द हिस्ट्री ऑफ पोपुलेशन ऐंड सोशल स्ट्रक्चर के तत्वावधान में सितम्बर 1969 मे कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें पीटर लैसेलेट ने पुराने जमाने के परिवारों के आकार और संरचना का विवरण और विश्लेषण प्रस्तुत किया था। लैसेलेट की आधारभूत मान्यता थी कि आधुनिक छोटे परिवार का जन्म औद्योगीकरण के कारण नहीं हुआ था। उनका यह मानना था कि इंग्लैंड और अन्य देशों में औद्योगीकरण के काफी पहले से कई शताब्दियों से छोटे परिवार मौजूद थे। यहां एक बात कही जाती है कि लैसेलेट को इंग्लैंड में तीन पीढ़ियों से ज्यादा बड़े परिवार का पता नहीं चल सका क्योंकि कैम्ब्रिज ग्रुप ने अधिकांश स्थानों पर पूरे पारिवारिक जीवन चक्र पर आधारित आंकड़ों का उपयोग नहीं किया। 19वीं शताब्दी के इंग्लैंड और अमेरिका के शहरों पर हुए अनुसंधान से यह पता चलता है कि छात्रावासों या अलग कमरा लेकर रहने वाले लोगों का भी अपने परिवार से गहरा संबंध था। इसके बावजूद लैसेलेट का आधारभूत तर्क अपने स्थान पर मौजूद है और उसे कोई चुनौती नहीं दे सका। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि औद्योगिक पूर्व और औद्योगिक परिवारों की संरचना में अलगाव की अपेक्षा निरंतरता ज्यादा थी।

द वर्ल्ड वी हैव लौस्ट नामक अपने सर्वेक्षण में लैसेलेट ने यह बताया है कि इंग्लैंड में छोटा परिवार हमेशा से मौजूद रहा है और अतीत में बड़े परिवारों का इतना कम प्रमाण मिलता है कि इस सिद्धांत में विश्वास करना कठिन होता है कि आधुनिक समाज में ही छोटे परिवार की शुरुआत हुई है। अधिकांश लोगों का बचपन इसी प्रकार के परिवार में गुजरा है और इसी प्रकार के परिवार में वे बड़े हुए हैं। लैसेलेट के अनुसार यह छोटा परिवार निरंतर जारी रहा है और इसके सदस्यों ने भी इसकी देखा देखी छोटे परिवार का निर्माण किया था।

लॉरेन्स स्टोन ने ऐतिहासिक परिवार के अनेक प्रकार बताए हैं जैसे 'खुला वंशावली परिवार', 'प्रतिबंधित पितृसत्तात्मक छोटा परिवार' और आधुनिक युग का 'बंद घरेलू छोटा परिवार'। इसके विपरीत कैम्ब्रिज ग्रुप ने आरंभिक आधुनिक युग में घरों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया था: साधारण (छोटा या दाम्पत्य आधारित), विस्तारित (दामपत्य इकाई के साथ में विधवा मां या विधुर पिता या अन्य संबंधी) और बहु विस्तारित (दो या तीन दम्पतियों की पारिवारिक इकाई)।

13.3.2 विभिन्न समय और स्थान के परिवारों की तुलना

1970 के दशक के आरंभ में लैसेलेट के कैम्ब्रिज ग्रुप ने ***हाउस होल्ड ऐंड फेमिली इन पास्ट टाइम*** नामक एक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में 16वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान तक के परिवारों और घरों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया था और उससे निष्कर्ष निकाले गए थे। लैसेलेट ने *'फैमिली लाइफ ऐंड इलिसिट लव इन अर्लियर जेनरेशन' तथा 'बास्टर्डी ऐंड इट्स कंपैरिटिव हिस्ट्री'* नामक दो महत्वपूर्ण लेख लिखे थे जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्वीडेन, उत्तरी अमेरिका, जमाइका, और जापान में विभिन्न संस्कृतियों में अवैधता के इतिहास और गैर परम्परागत वैवाहिक स्थितियों का अध्ययन किया था।

उत्तर पश्चिम यूरोप के परिवारिक ढांचों की चार विशेषताएं थीं : छोटा परिवार, देर से बच्चा पैदा करना, एक ही उम्र के पति-पत्नी और घरों में पर्याप्त संख्या में गैर संबंधियों की उपस्थिति। पश्चिमी यूरोप के पूर्व औद्योगिक घर परिवारों में छोटे परिवार का वर्चस्व था और शादी के पहले लोगों को परिवार के बंधन में रहना पड़ता था। लैसलेट ने बताया है कि परिवार कई पीढ़ियों से जुड़े होते थे। पोलैंड और हंगरी में भी छोटे परिवार पाए जाते थे। इससे यह पता चलता है कि परिवार का यह रूप केवल पश्चिमी यूरोप तक सीमित नहीं था; हां, उत्तरी पश्चिम यूरोप में छोटे परिवार की बहुलता थी। हालांकि पश्चिमी यूरोप के पूर्व औद्योगिक समाज में छोटे परिवार की बहुलता थी परंतु उत्तर पश्चिमी और यूरोप के अन्य देशों में परिवार के आकर में भी ज्यादा विभिन्नता नहीं थी। इसका कारण यह था कि मालिकों के साथ काफी संख्या में नौकर भी घरों में रहा करते थे और उन्हें भी घर के सदस्यों में गिना जाता था। हालांकि पूरे यूरोप में घर-परिवार के आकार लगभग समान थे परंतु यह समानता ऊपरी थी और घरेलू संरचना में अंतर था। हैजनल के अनुसार पूर्व औद्योगिक काल में यूरोप के इस क्षेत्र में 6 से 10 प्रतिशत लोग नौकर के रूप में काम करते थे। इसका कारण यह था कि पशुपालन रोजगार का एक प्रमुख साधन था। कृषीय व्यवस्था के विकास होने से विवाह कर अलग घर बसाने की इच्छा की शुरुआत हुई। नौकरों के बीच विवाह का स्वागत नहीं किया जाता था क्योंकि इससे काम में बाधा पड़ती थी और इसके कारण अकेले तथा बिना बच्चे के युवा व्यक्तियों का अनुपात बढ़ा और इस कारण विवाह करने की उम्र बढ़ी और इससे बचत भी हुई। सार्वजनिक सहायता और अनुबंध अवकाश प्राप्ति की उपलब्धता के कारण भी लोग देर से विवाह करने लगे। पूरे उत्तर पश्चिम यूरोप में गरीबों के लिए संस्थागत सहायता की प्रथा चल पड़ी। इसके कारण बुढ़ापे में गरीबी की हालत में बच्चों पर निर्भरता में कमी आई।

अतीत में पश्चिम यूरोपीय परिवार के संबंध में इस नए विचार से कई प्रश्न उभर कर सामने आते हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है औद्योगिक क्रांति से आधुनिक छोटे परिवार का जन्म नहीं हुआ। तब सवाल यह उठता है कि क्या छोटे परिवारों ने क्रांतिकारी आर्थिक परिवर्तन को जन्म दिया जो औद्योगिक क्रांति के साथ आए।

हालांकि यदि यह मान भी लिया जाए तो औद्योगिक क्रांति से परिवार या घरेलू व्यवस्था से कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं आया तब भी यह नहीं कहा जा सकता है कि पूरे ऐतिहासिक काल में इन संस्थाओं में कोई परिवर्तन आया ही नहीं। उदाहरण के लिए इंग्लैंड में एलिजाबेथ काल के 'पूअर लॉ' (निर्धन कानून) को ही लिया जा सकता

है जिसने वह जिम्मेदारी अब चर्च पर डाल दी जो पहले दाम्पत्य परिवार और वंश पर थी। इससे दाम्पत्य परिवार के बाहर व्यक्तिगत और पारिवारिक संबंध कमजोर पड़ने लगे।

आइए, अब हम इंग्लैंड और यूरोपीय महाद्वीप में परिवार के इतिहास पर किए गए नए शोधों पर विचार करें। एलिजाबेथ कालीन इंग्लैंड में समृद्ध परिवारों में वैवाहिक दम्पत्ति के अलावा सेवक और कभी-कभी दादा/दादी, नाना/नानी भी परिवार में साथ रहा करते थे। आधारभूत जनन समुदाय का पार्श्व और ऊर्ध्व विस्तार नहीं होता था। पुरुषों और महिलाओं दोनों की शादी देर से होना प्रचलित था और औसतन पहली शादी 25 से 30 वर्ष के बीच होती थी। 1377 और 1381 के गृह करों पर आधारित अनुसंधान यह बताते हैं कि 14वीं शताब्दी के अंत में देर से विवाह करने और छोटे तथा अलग पारिवारिक जीवन की प्रथा चल पड़ी थी। हालांकि ट्यूडर (1485-1603) और विक्टोरियन (1837-1901) कालों में घरेलू आकारों में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ परंतु इनके बीच के वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। घर के नौकरों का साथ रहना कम हुआ, पहले विवाह की उम्र विशेषकर महिलाओं में बढ़ी और यह 17वीं शताब्दी के अंत और 18वीं शताब्दी के आरंभ में अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई। एक परिवार का औसत आकार छोटा हुआ और नवजात शिशु और बच्चों के मृत्यु दर बढ़ी। हालांकि 18वीं शताब्दी में वैवाहिक और जनन क्षमता पद्धति एक बार फिर से एलिजाबेथ युग के करीब आ गई।

महाद्विपीय यूरोप में इंग्लैंड की अपेक्षा ज्यादा विभिन्नता थी। हालांकि हालैंड जैसे छोटे से देश में भी विभिन्नताएं थीं परतु यूरोपीय महाद्वीप को दो प्रमुख क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है। पश्चिमी यूरोप में छोटा परिवार था जबकि आस्ट्रिया, फ्रांस और जर्मनी में एक परिवार में कई पीढ़ी के लोग परिवार में रहते थे। पूर्वी यूरोप में बड़े और जटिल परिवार मौजूद थे जिसमें पुरानी पीढ़ी के लोग भी रहते थे और मौजूदा पीढ़ी के भी ज्यादा लोग रहते थे। यह पूर्वी पद्धति रूस में अपने उत्कर्ष पर पहुंच गई जहां कृषि दासों के बड़े परिवार थे। वैवाहिक पद्धति की दृष्टि से पूर्वी और पश्चिम यूरोप में विभिन्नता थी। विवाह की उम्र भी कम थी और विवाह न करने वालों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम थी। हैजनल ने लेनिन ग्राद से ट्रेस्टी तक एक काल्पनिक रेखा खींचकर पश्चिमी और पूर्वी वैवाहिक पद्धति में अन्तर स्पष्ट किया है। पश्चिमी और पूर्वी पारिवारिक और वैवाहिक रूपों में अन्तर काफी था इसलिए औद्योगिक समाज में रूपांतरण के समय पूर्वी प्रदेश में बहुत ज्यादा परिवर्तन आया। मध्य यूरोप के देशों में पश्चिमी और पूर्वी यूरोप का मिश्रण था और यहां के परिवार दोनों प्रकार के परिवारों के मिले जुले रूप थे।

बोध प्रश्न 1

1) परिवार को समझने के लिए पारिवारिक ढाँचे का विश्लेषण बेहतर प्रविधि क्यों है ?

....

....

....

....

....

2) लैसेलेट के यूरोपीय परिवार के अध्ययन की सीमाएं क्या है ?

....

....

....

....

....

3) पश्चिम यूरोप में औद्योगिकरण से पूर्व के पारिवारिक ढांचे की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या हैं ?

....

....

....

....

....

13.4 आर्थिक बदलाव और परिवार

सामाजिक और आर्थिक जीवन के क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों का परिवार से गहरा रिश्ता था। अन्य सामाजिक संस्थाओं के समान परिवार के बारे में भी यह कहना बड़ा कठिन है कि आर्थिक परिवर्तन और परिवार में हो रहे परिवर्तनों के बीच कोई सीधा संबंध था। यह भी कहना खतरे से खाली नहीं है कि आस पास घट रही घटनाओं का परिवार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इमैनुअल ले रॉय लेडुरी जैसे कुछ लेखकों ने अतीत के सामाजिक जीवन की पुनर्रचना करते हुए यह दिखाने की कोशिश की है कि शताब्दियों तक परिवार के रूप में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं हुआ। आर ब्राउन और अन्य कई लेखकों ने यह दिखाया है कि मध्य और उत्तर पश्चिम यूरोप में तीव्र गति से आर्थिक परिवर्तन वाले कालों में जनसांख्यिकी और पारिवारिक संस्थाओं मे परिवर्तन आया था।

13.4.1 वैवाहिक व्यवस्थाओं को समझने के तरीके

रिंगले और स्कॉफिल्ड द्वारा इंग्लैंड के संदर्भ में किए गए अनुसंधान ने यह बात स्पष्ट होकर दिखाई कि प्रथम विवाह की उम्र और विवाह की दर से जनन क्षमता स्तर का निर्धारण होता था मृत्यु दर का नहीं। अन्य अनुसंधानकर्ताओं ने भी उत्तर पश्चिम यूरोप में भी मृत्यु दर और जनन क्षमता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं दिखाया। यदि औद्योगिक पूर्व जनसंख्या विवाह के बारे में निर्णय लेते समय आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखतीं तो आर्थिक उपार्जन और विवाह करने के बीच सीधा संबंध होता और वास्तविक आय बढ़ने के साथ विवाह दर भी बढ़ती। इंग्लैंड के संदर्भ में हुए अध्ययन में प्रथम विवाह और विवाह की दर के संदर्भ में यह परस्पर संबंध देखने को मिलता है। बाद के अध्ययनों में इस धारणा को कुछ हद तक सुधारा गया। 1750 के पहले अविवाहित रहने का आर्थिक उपार्जन का विवाह से निकट का संबध था जबकि 1750 के बाद प्रथम विवाह ही प्रमुख भूमिका निभाता था। रिंगले और शोफिल्ड ने आर्थिक उपार्जन और विवाह के बीच 40 वर्षों का अन्तराल रखा था जबकि अन्य विद्वानों ने मजदूरी में वृद्धि और विवाह दर में परिवर्तन के लिए एक अलग आधार का उपयोग करते हुए 15 से 20 वर्ष का अन्तराल सुझाया है। इस प्रकार के संबंध नीदरलैंड में भी पाए गए हैं। उत्तर पश्चिमी यूरोप के पारिवारिक ढांचे की व्यवस्था को देखते हुए जिसका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं, मजदूरी और देर से विवाह करने तथा अविवाहित रहने के बीच सीधा संबंध दिखाई पड़ता है। 1750 के बाद इंग्लैंड में प्रथम विवाह की उम्र कम हुई तथा विवाह की दर स्थिर रही। कुछ लेखकों ने इस परिघटना की व्याख्या करने के लिए रोजगार संरचना, नियोक्ता और नौकरी पेशा लोगों के बीच के संबंधों, उद्योगों तथा कृषि में अवसर संबंधी संरचनाओं में आए परिवर्तन पर बल दिया है। कृषि और घरेलू काम-काज में लगी विवाहित महिलाओं पर काफी प्रतिबंध लगे हुए थे जिसके कारण वैवाहिक स्थिरता कम थी। कोयला खनन जैसी ऊंची मजदूरी वाले उद्योगों में पुरुषों के लिए महिलाओं से वित्तीय सहायता लिए बिना विवाह करना संभव था। कपड़ा उद्योग में भी मजदूरों के विवाह सामान्य संख्या में होते थे। यहां विवाहित महिलाओं को नौकरी करने से रोका नहीं जाता था परंतु अविवाहित महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती थी। यहां मजदूरी कम थी और (परिवार में) महिलाओं से भी कुछ योगदान की आशा की जाती थी। ऐसी परिस्थिति में परम्परागत क्षेत्र में कुछ हद तक विवाह को टाला जाता था। इस प्रकार विवाह का संबंध मजदूरी के स्तर और महिलाओं के रोजगार की संरचनात्मक सीमाओं से था।

13.4.2 परिवार और औद्योगिक क्रांति

कई विद्वानों ने यह मान लिया कि औद्योगिक क्रांति के दौरान होने वाले परिवर्तनों का सीधा प्रभाव परिवार

पर पड़ा और इसमें नाटकीय परिवर्तन आया होगा। बाद के अनुसंधानों में इस विचार को नकार दिया गया। औद्योगीकरण के दौरान सर्वाधिक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकी परिवर्तन हुआ और इस दौरान जानबूझकर परिवार के आकार पर नियंत्रण लगाया गया तथा बच्चे कम पैदा किए गए। हालांकि यह काफी बाद में हुआ और वास्तव में आर्थिक वृद्धि तेज होने के बाद ही ऐसा किया गया और भी परिवर्तन आए जैसे घर और काम करने का स्थान अलग-अलग हो गया परंतु इस प्रकार का परिवर्तन पहले भी हुआ था; उदाहरण के लिए उस समय जब पशुपालन से जुड़े सेवक वेतन भोगी मजदूर बन गए थे। औद्योगीकरण के दौरान हुए ये परिवर्तन पारिवारिक जीवन के आकार और स्वरूप में हुए परिवर्तन में प्रतिबिंबित नहीं हुए इसका एक कारण यह था कि ये परिवर्तन बिलकुल सरल और सीधे नहीं थे। इसका अधिक खुलासा यह है कि अपने हितों को बढ़ावा देना, बौद्धिकता विशिष्ट काम करने की विशेषज्ञता और रीति रिवाजों के स्थान पर उपलब्धियों को महत्व दिया जाना जैसी अवधारणाओं का विकास आधुनिकता से जुड़ा है जो औद्योगीकरण के साथ आई। इस संदर्भ में यह मान लिया गया कि जैसे-जैसे आधुनिकीकरण के कदम बढ़ते गए इसका प्रभाव परिवार पर पड़ा और यह अधिक 'आधुनिक' हो गया। हालांकि गौर से देखने पर यह बात मालूम होती है कि आधुनिकीकरण और औद्योगीकरण के बीच का संबंध आवश्यक नहीं मात्र एक संयोग था। औद्योगीकरण के आरंभिक दौर के सामाजिक परिवेश के अनुभवों पर आधारित साक्ष्यों के परीक्षण से यह बात सामने आती है कि इस दौरान गांवों से काफी संख्या में लोग भीड़ भाड़ भरे शहरों में आए; राज्य कल्याणकारी संस्थाओं का अभाव था; वंशीय संबंधों पर निर्भरता बनी हुई थी, एक ही घर में काफी ज्यादा लोग रहते थे आदि। ये परिस्थितियां पहले के परिवार और घरेलू संरचना के निकट थी और एकाएक 'आधुनिक' छोटे परिवार के अचानक पनपने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। औद्योगीकरण के विकसित होने और औद्योगिक पूंजीवाद के कारण आर्थिक उत्पादकता में वृद्धि होने और इसका लाभ समाज के निचले हिस्सों तक पहुंचने के बाद पारिवारिक जीवन और घरेलू संरचना में धीरे-धीरे परिवर्तन होना आरंभ हुआ।

ऊपर हुए विचार-विमर्श से यह बात स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आई कि औद्योगीकरण के पूर्व पूरे यूरोप में जनसांख्यिकी प्रवृत्ति एक जैसी थी और यूरोपीय परिवार और घरेलू संरचना की विशेषताएं और उनमें आए परिवर्तन लगभग एक जैसे थे। आधुनिक और पूर्व आधुनिक जनसांख्यिकी में जनन क्षमता पर नियंत्रण लगने की इच्छा की दृष्टि से कोई अंतर नहीं था; हां नियंत्रण लगाने के साधन में अंतर अवश्य आया। औद्योगिक उत्पादकता में हुए परिवर्तनों, आविष्कारों, रोजगार में आए बदलावों और मजदूरी स्तर के कारण परम्परागत वैवाहिक स्थितियों और पारिवारिक स्वरूप में अंतर आया।

बोध प्रश्न 2

1) क्या यूरोप में वास्तविक मजदूरी (आय) की दर और विवाह करने के बीच कोई निकट का संबंध था ?

....

....

....

....

....

2) क्या यह कहा जा सकता है कि औद्योगिक क्रांति का प्रभाव परिवार पर अपने आप पड़ गया ?

....

....

....

....

....

13.5 सारांश

इस इकाई में हमने यह जाना कि,

- किस प्रकार पारिवारिक ढांचे के विश्लेषण से परिवार और उससे जुड़े पक्षों की प्रवृत्ति का पता चलता है
- किस प्रकार इतिहासकारों ने पूर्व औद्योगिक और औद्योगिक पारिवारिक संरचना के बीच निरंतरता और अलगाव को स्पष्ट किया
- किस प्रकार विवाह पद्धति और मजदूरी जैसे परिवर्तनीय कारकों के बीच के संबंध के कारण आर्थिक परिवर्तन और परिवार की प्रकृति के बीच के संबंध का सिद्धांत सामने आया।

13.6 शब्दावली

पोल कर : यूरोप में प्रत्येक व्यक्ति पर लगने वाला कर

वास्तविक/मजदूरी : क्रय शक्ति सूचकांक पर आधारित मजदूरी

13.7 बोध प्रश्नों के उत्तर-

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 13.2.2। इसमें राज्य और चर्च के कार्यालयों के स्रोतों का उल्लेख कर सकते हैं।
2) देखिए उपभाग 13.3.1। इसमें आप यह बता सकते हैं कि उसने किस प्रकार पारिवारिक जीवन चक्र पर विचार नहीं किया।
3) देखिए उपभाग 13.3.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 13.4.1
2) देखिए उपभाग 13.4.2